

14. देश के सम्मान के लिए

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

बहुत दिन हुए भारत से दो आदमी सैर के लिए जापान गये। एक दिन एक बड़े नगर में घूमते हुए उन्होंने फलों की दुकान से चार आने का एक सेब खरीदा। जब वे दुकान से कुछ दूर गये तो आठ नौ साल के एक जापानी बालक ने उनके पास आकर कहा—“यह सेब मुझे दे दो और चार आने ले लो।”

उन दोनों ने दुकान की तरफ संकेत कर कहा— “जाकर उस दुकान से खरीद लो।” परन्तु बालक दुकान से सेब खरीदने के लिए तैयार न हुआ। वह उसी सेब को खरीदने की हठ करने लगा।

उन भारतीयों ने बालक के हठ को ढिठाई समझकर उसे डांट दिया। इस पर वह रोने लगा। उसके रोने पर उन दोनों को कुछ दया आई और उन्होंने पुचकार कर पूछा—“बेटा तुम हमारे सेब को खरीदने के लिए हठ क्यों कर रहे हो ?”

बालक ने उत्तर दिया—“इस सेब की कीमत तीन आने है, दुकानदार ने आपको अनजान जानकर आपसे चार आने ले लिए हैं। जब आपको यह पता लगेगा कि इस सेब का मोल तीन आने है तो आप सोचेंगे कि जापान के लोग बेईमान होते हैं। इससे मेरे देश की बदनामी होगी।”

यह सुनकर दोनों भारतीय दंग रह गये। उन्होंने वह सेब लड़के को देकर अपने चार आने वापस ले लिये। यह है राष्ट्रीय चरित्र।

* अभ्यास *

1. जापान के बालक कैसे होते हैं ?
2. बालक सेब न मिलने पर क्यों रोया ?
3. बालक का जवाब सुनकर भारतीय क्यों दंग रह गये ?
4. इस घटना से जापान के बच्चों के किस चरित्र का पता चलता है ?

☆☆☆☆☆